Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – I

भाग – 3

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL – 1

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	बाल विकास, शिक्षा शास्त्र एवं शिक्षण विधियाँ	
1.	मनोविज्ञान की अवधारणा	1
2.	बाल विकास	23
3.	अधिगम एवं अधिगम प्रक्रिया व अधिगम में आने वाली कठिनाईयाँ	49
4.	व्यक्तित्व	93
5.	समायोजन एवं कुसमायोजन	107
6.	व्यक्तिगत भिन्नता	113
7.	अभिप्रेरणा	120
8.	बुद्धि	128
9.	चिंतन, तर्क, कल्पना	142
10.	आंकलन, मापन एवं मूल्यांकन	148
11.	समग्र एवं सतत् मूल्यांकन	152
12.	उपलब्धि परीक्षण	155
13.	सीखने के प्रतिफल	158
14.	क्रियात्मक अनुसंधान	161
15.	NCF (National Curriculum Framework) 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा	163
16.	RTE 2009 (शिक्षा का अधिकार अधिनियम)	165
17.	मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण पुस्तकें	175

शिक्षण विधियाँ

	शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – I	
1.	सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन की संकल्पना	177
2.	कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाएँ	181
3.	सामाजिक अध्ययन के अध्यापन सम्बन्धी समस्याएँ	189
4.	समालोचनात्मक चिन्तन	190
	शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – II	
1.	पृच्छा/आनुभाविक साध्य	192
2.	शिक्षण अधिगम सामग्री एवं सहायक सामग्री	193
3.	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	217
4.	प्रायोजना कार्य	232
5.	सीखने के प्रतिफल	233
6.	मूल्यांकन	239

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

बालविकास
अभिवृद्धि एवं विकास

अभिवृद्धि की अवधारणा एवं अर्थ

- अभिवृद्धि का अर्थ शरीर और उसके अंगो के भार और आकार में वृद्धि से लिया जाता है।
- अभिवृद्धि को मापा व तौला जा सकता है। अभिवृद्धि शब्द अभि व वृद्धि से मिलकर बना है जिसका अर्थ ''चारों ओर फैल जाना'' होता है।
- अभिवृद्धि परिपक्वता तक चलने वाली प्रक्रिया है।
- अभिवृद्धि एक निश्चित समय तक चलती है।
- अभिवृद्धि वह परिवर्तन है जिसे स्पष्ट देखा जा सकता है।
- अभिवृद्धि में शारीरिक एवं कोशिकाओं में वृद्धि होती है।
- अभिवृद्वि एक क्रमिक प्रक्रिया है।
- अभिवृद्धि में प्रत्येक अवस्था की अपनी विशिष्ट विर्षेषताएँ होती है।
- अभिवृद्धि के साथ विकास भी अनवरत प्रक्रिया में चलता रहता है।

हरलॉक

- ''अभिवृद्धि मात्रात्मक परिवर्तन है जिसमे हड्डियो का बढ़ना, बालो का बढ़ना, माँसपेशियो का बढ़ना शामिल होता है।''

फ्रैंक

- ''अभिवृद्धि कोशिकाओं में होने वाली वृद्धि से है।''

मेरीडथ

- अभिवृद्धि का अर्थ आकार में वृद्धि से जबकी विकास का विशिष्टीकरण से है।

विकास

- विकास एक गुणात्मक परिवर्तन है जिसमें अभिवृद्धि शामिल होती है।
- विकास जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- मनोविज्ञान में विकास को क्रमिक परिवर्तनों की प्रक्रिया माना है।
- विकास को मापा नही जा सकता बल्कि अनुभव किया जा सकता है।
- विकास में शारीरिक के साथ–साथ मानसिक परिवर्तन भी होते है।
- विकास की गति भिन्न–भिन्न होती है। विभिन्न अवस्थाओं में भी दर भिन्न–भिन्न रहती है।
- विकास के कारण व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ एवं योग्यताएँ प्रकट होती है।
- विकास एक व्यापक प्रक्रिया है, इससे व्यक्ति के जीवन काल में आये सभी परिवर्तनो को शामिल किया जाता है।
- विकास वातावरण एवं वंशक्रम दोनो से प्रभावित होता है।
- विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है।
- विकास में मात्रात्मक व गुणात्मक दोनों प्रक्रिया शामिल होती है।

हरलॉक

- ''विकास अभिवृद्धि तक ही सीमित नही है। इसके बजाय इसमें प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है।''

वुडवर्थ

- ''मानव विकास को व्रंशानुक्रम एवं वातावरण का गुणनफल माना''।

गैसल

- ''विकास ऐसे परिवर्तन होते हैं जिनके द्वारा बालक में नवीन गुणों एवं क्षमताओं का विकास होता है।''

ड्रेवर

- ''विकास प्राणी में होने वाला प्रगतिशील परिवर्तन है, जो किसी लक्ष्य की ओर लगातार निर्देशित रहता है।''

मुनरो

- ''बालक के जन्म से प्रौढ़ावस्था की अवस्था परिवर्तन यात्रा विकास कहलाती है।''

अभिवृद्धि एवं विकास में अन्तर

	अभिवृद्धि	विकास
1.	अभिवृद्धि शरीर एवं उसके अंगो में वृद्धि से है।	विकास में शरीर के साथ मानसिक परिवर्तन भी होते है।
2.	अभिवृद्धि में संरचनात्मक परिवर्तन होते है।	विकास में प्रकार्यात्मक परिवर्तन होते है।
3.	अभिवृद्धि एक निश्चित समय तक चलने वाली प्रक्रिया है।	विकास एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
4.	अभिवृद्धि मात्रात्मक होती है।	विकास मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों होता है।
5.	अभिवृद्धि को देखा एवं मापा जा सकता है।	विकास को महसूस किया जा सकता है।
6.	अभिवृद्धि का संबंध रचनात्मक परिवर्तनों से है।	विकास का संबंध रचनात्मक एवं विनाशात्मक दोनों परिवर्तनों से होता है।

विकास के सिद्धान्त

1. निरन्तरता का सिद्धान्त

- बालक का विकास गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
- बालक के प्रथम तीन वर्षो में विकास तीव्र गति से होता है जबकी बाद की अवस्था में मंद हो जाता है।

2. समान प्रतिमान का सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन गैसेल व हरलॉक ने किया।
- इस सिद्धान्त के अनुसार सभी प्राणियों का विकास अपनी जाति के अनुसार ही होता है।

3. व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के अनुसार बालकों का विकास एक क्रम में होता है लेकिन उनके विकास में व्यक्तिगत भिन्नता होती है।

4. विकास की विभिन्न गति का सिद्धान्त

- विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में भिन्नता होती है जो सम्पूर्ण जीवन भर चलती है।

5. विकास क्रम का सिद्धान्त

- बालक का विकास एक निश्चित क्रम में होता है। जैसे–शैशवावस्था ⟶ बाल्यावस्था ⟶ किशोरावस्था ⟶ युवावस्था ⟶ प्रौढ़ावस्था आदि।

6. एकीकरण का सिद्धान्त

- बालकों के विकास पहले सम्पूर्ण अंगो का विकास होता है, उसके बाद अंगो के भागों का विकास होता है। उसके बाद सभी अंगो का एकीकरण होता है।

7. सामान्य व विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के अनुसार बालक का विकास सामान्य प्रतिक्रियाओं से विषिश्ट प्रतिक्रियाओं की ओर होता है।

हरलॉक

- ''विकास की सब अवस्थाओं में बालक की प्रतिक्रियायें विशिष्ट बनने से पूर्व सामान्य प्रकार की होती है।''

8. वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्तः क्रिया का सिद्धान्त

- बालक का विकास वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों की अन्तः क्रिया का फल है।

9. परस्पर संबंध का सिद्धान्त

- बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि सभी भागों का विकास एक–दूसरे पर निर्भर करता है।

10. विकास की दिशा का सिद्धान्त

- बालक का विकास सिर से पैर की ओर होता है। इसके सीरोपुच्छीय सिद्धान्त भी कहते है।

11. केन्द्रोभिमुखी विकास

- बालक का विकास केन्द्र से बाहर की ओर होता है।

12. वर्तुलाकार विकास का सिद्धान्त

- बालक का विकास एक वर्त की तरह होता है। इसे चक्रीय विकास का सिद्धान्त भी कहते है।

बाल विकास

- बाल मनोविज्ञान में बालक का जन्म से लेकर किषोरावसाी तक अध्ययन किया जाता है।
- बाल विकास में बालक का गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक अध्ययन किया जाता है। इसी कारण बाल मनोविज्ञान को बाल विकास कहा जाने लगा।

हरलॉक

- बाल मनोविज्ञान को बाल विकास इसलिए कहा जाने लगा कि उसमें एक पक्ष के अध्ययन की बजाय सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है।
- सर्वप्रथम 1629 ई. में कॉमेनियस ने 'School of Infency' की स्थापना कर बाल विकास का अध्ययन शुरू किया।
- पेस्टोलॉजी ने बाल मनोविज्ञान पर वैज्ञानिक अध्ययन किया तथा अपने साढ़े तीन वर्षीय बेटे पर प्रयोग किये तथा Baby Biography की रचना की।
- प्रेयर ने बालको पर Mind of Child नामक पुस्तक की रचना की।
- 19वीं शताब्दी में स्टेनले हॉल ने Child Study Society एवं Child Welfare Organization नामक संस्थाओं की स्थापना की।
- स्टेनले हॉल को बाल मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।
- टैने ने 1869 ई. में Infant Child Development नामक पुस्तक की रचना की।
- भारत में बाल विकास अध्ययन 1930 ई. में कलकत्ता विश्वविद्यालय में ताराबाई मोडेक के प्रयासों से किया गया।

क्रो एंड क्रो

- बाल मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमे बालक गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक अध्ययन किया जाता है।

बर्क

- बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म पूर्व अवस्था से परिपक्व अवस्था तक होने वाले विकास का अध्ययन किया जाता है।

विकास की अवस्थाएँ

शैशवावस्था	–	जन्म से 5 वर्ष
बाल्यावस्था	–	6 से 12 वर्ष
किशोरावस्था	–	13 से 18 वर्ष
प्रौढ़ावस्था	–	19 के बाद

कॉलसैनिक के अनुसार

I. शैशव – जन्म से 3/4 सप्ताह
II. उत्तर शैशव – 15 से 30 माह
III. पूर्व बाल्यावस्था – 2.5 से 5 वर्ष
IV. मध्य बाल्यावस्था – 5 से 9 वर्ष
V. उत्तर बाल्यावस्था – 9 से 12 वर्ष
VI. किशोरावस्था – 12 से 21 वर्ष

हरलॉक के अनुसार

I. गर्भावस्था (जन्म तक)
II. नवजात अवस्था (जन्म से 14 दिन)
III. शैशवावस्था
IV. बाल्यावस्था (2–11 वर्ष)
V. किशोरावस्था (11–21 वर्ष)

रोस के अनुसार

I. शैशवावस्था – 1 से 3 वर्ष
II. पूर्व बाल्यावस्था – 3 से 6 वर्ष
III. उत्तर बाल्यावस्था – 6 से 12 वर्ष
IV. किशोरावस्था – 12 से 18 वर्ष तक

शैश्वावस्था – 0 से 5 वर्ष/जन्म से 5 वर्ष

थार्नडाइक

- ''3 से 6 वर्ष की आयु का बालक प्रायः अर्द्ध स्वप्न की अवस्था में रहते है।''

फ्रायड

- ''व्यक्ति को जो कुछ भी बनना होता है वह चार–पाँच वर्षों में बन जाता है।''

स्ट्रेंग

- ''जीवन के प्रथम दो वर्षो में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है।''

गुड एनफ

- ''व्यक्ति का जीतना भी विकास होता है। उसका आधा 3 वर्ष में हो जाता है।''

वेलेन्टाइन

- शैशवावस्था सीखने का आदर्शकाल है।

गैसल

- ''प्रारम्भिक 6 वर्षो का विकास बाद के 12 वर्ष से भी दुगुना विकास होता है।''

ब्रिजेज

- ''दो वर्ष की उम्र तक बालक में सभी संवेगों का विकास हो जाता है।''

क्रो एंड क्रो

- ''20 वी शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा''।

रूसो

- बालक के हाथ पैर व आँख उसके प्राथमिक शिक्षक होते है।

ड्राइडेन

- सर्वप्रथम हम हमारी आदतों का निर्माण करते बाद में आदतें हमारा निर्माण करती है।

शैशवावस्था में शारीरिक विकास

- भार – 7.5 पौण्ड
- लम्बाई – जन्म के समय–50 सेमी
- 5 वर्ष में लम्बाई – 100 सेमी
- नवजात शिशु के सिर का वजन – 350 ग्राम
- हड्डियों की संख्या – 270
- नवजात शिशु के माँसपेशियों का वजन – कुल वजन का 23% होता है।
- नवजात शिशु की हृदय धड़कन – 140/मिनट

शैशवावस्था में मानसिक विकास

- 1 माह का बालक आवश्यकता पूर्ति के लिए जोर से आवाज करता है।
- 2 माह का बालक चमकीली वस्तुओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है।
- 3 माह का बालक अपनी माँ को पहचानने लगता है।
- 4 माह का बालक अपने नाम को समझने लगता है।
- 8 माह का बालक अपनी पसंद की वस्तु को जमीन से उठाता है।
- 12 माह का बालक 1 या 2 अक्षरों के सार्थक शब्द बोलता है एवं छोटे–छोटे अनुकरण करने लगता है।
- 4 वर्ष का बालक 5/7 अक्षरों का शब्द बोलता है एवं 1–10 तक गिनती बोल सकता है।
- 6 वर्ष का बालक व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध वाक्य बोल सकता है।
- वाटसन ने भय, क्रोध एवं प्रेम तीन संवेग बताये।
- ब्रिजेज ने नवजात शिशु में उत्तेजना नामक संवेग बताया।
- 1 वर्ष के बालक मे संवेग बनना प्रारम्भ होते है।
- 2 वर्ष के बालकों में सभी प्रकार के संवेग पाये जाते है।
- 4 वर्ष के बालकों के संवेगो पर वातावरण अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ करता है।
- बाल्यावस्था में सर्वाधिक अस्थायी संवेग होते है।
- किशोरावस्था में सर्वाधिक स्थायी संवेग बनते है।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास

- इस अवस्था में सामाजिक गुणो का अभाव पाया जाता है।
- इस अवस्था में बालक–बालिकाओं को सामाजिक संबंधों का ज्ञान नही होता है।
- इस अवस्था में बालक स्वार्थी व स्वकेन्द्रित होता है।
- बालकों में सामाजिक गुणों की नींव सर्वप्रथम माँ द्वारा इसी अवस्था मे डाली जाती है।

शैशवावस्था के उपनाम

i. सीखने का आदर्श काल
ii. जीवन का महत्वपूर्ण काल
iii. भावी जीवन की आधारशीला
iv. अनुकरण द्वारा सीखने की अवस्था
v. खिलौनो की आयु

vi. पूर्व प्राथमिक विद्यालय की आयु
vii. पराधीनता की अवस्था
viii. अतार्किक चिन्तन की अवस्था

शैशवावस्था की विशेषताएँ

1. शारीरिक विकास की तीव्रता
2. मानसिक विकास की तीव्रता
3. कल्पना की सजीवता
4. आत्म प्रेम/स्वमोह की अवस्था
5. नैतिक गुणों का विकास
6. मूल प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार
7. अनुकरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया
8. जिज्ञासा प्रवृत्ति
9. दोहराने की प्रवृत्ति
10. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
11. संवेगो का प्रदर्शन
12. काम शक्ति का प्रदर्शन
13. खिलौनों में सर्वाधिक रूचि
14. प्रिय लगने वाली अवस्था
15. प्रारम्भिक विद्यालय की पूर्व तैयारी की आयु
16. भाषाई कौशलों का विकास

शैशवावस्था में शिक्षा

वाटसन

- ''शैशवावस्था में सीखने की सीमा और तीव्रता विकास की और किसी भी अवस्था में नही होती है।''
    1. **उचित वातावरण** – शिशु अपने विकास के लिए शान्त स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण देना चाहिए।
    2. **उचित व्यवहार** – बालक के प्रति सदैव प्रेम, शिष्टता, सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए।
    3. जिज्ञासा की सन्तुष्टि
    4. वास्तविकता का ज्ञान
    5. आत्म–निर्भरता का विकास
    6. निहित गुणों का विकास
    7. सामाजिक भावना का विकास
    8. मानसिक क्रियाओं का अवसर
    9. मूल प्रवृतियों को प्रोत्साहन
    10. क्रिया द्वारा शिक्षा
    11. आत्म प्रदर्शन का अवसर
    12. अच्छी आदतों का निर्माण
    13. खेल द्वारा शिक्षा
    14. विभिन्न अंगों की शिक्षा
    15. चित्रों व कहानियों द्वारा शिक्षा

बाल्यावस्था–6 से 12 वर्ष

कोल एवं ब्रुस

- ''बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है।''

रॉस

- ''बाल्यावस्था को मिथ्या या छद्म परिपक्वता का काल कहा है।''

स्ट्रेंग

- ''ऐसा शायद ही कोई हो जिसे बालक 10 वर्ष की उम्र मे ना खेला हो।''

किल पेट्रिक

- ''बाल्यावस्था को प्रतिद्वन्दात्मक समाजीकरण का काल कहा है।''

बर्ट

- ''बाल्यावस्था में भ्रमण व साहसिक कार्य की प्रवृति में वृद्धि होती है।''

ब्लेयर, जोन्स

- ''शैक्षिक दृष्टिकोण से बाल्यावस्था से अधिक जीवन में कोई महत्वपूर्ण अवस्था नहीं है।''

एटकिन्सन

- ''बाल्यावस्था जीवन का सबसे आनन्ददायक काल है।''

बाल्यावस्था में शारीरिक विकास

- वजन – 27/28 किलो
- लम्बाई – 136 सेमी
- हड्डियों की संख्या – 350
- सिर का वजन – 950–1150 ग्राम
- दाँतो की संख्या – 28
- श्वसन क्रिया – 20/मिनट
- हृदय की धड़कन – 85/मिनट

सामाजिक विकास

1. सामाजिक गुणों का सर्वाधिक विकास इसी अवस्था में होता है।
2. इस अवस्था में बालक माता–पिता से दूर एवं शिक्षक के सर्वाधिक नजदीक रहता है।
3. सर्वाधिक सामाजिक गुणो का विकास खेल के मैदान में होता है।
4. इस अवस्था में समलिंगी सदभावना पायी जाती है।

बाल्यावस्था के उपनाम

1. मूर्त चिंतन की अवस्था
2. प्राथमिक विद्यालय की अवस्था
3. शैक्षणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण काल
4. टोली/समूह की अवस्था

5. वस्तु संग्रहण की अवस्था
6. मिथ्या परिपक्वता का काल
7. छद्म परिपक्वता का काल

बाल्यावस्था की विशेषताएँ

1. शारीरिक विकास में स्थिरता
2. मानसिक विकास में स्थिरता
3. वास्तविक जगत से संबंधित
4. समूह भावना का विकास
5. नैतिक गुणो का विकास
6. संग्रह करने की प्रवृति
7. रूचियों में परिवर्तन
8. बहिर्मुखी व्यक्तित्व
9. वैचारिक क्रिया की अवस्था
10. नये कौशलों एवं क्षमताओ के विकास की वृद्धि
11. स्थूल संक्रियात्मक अवस्था
12. अदला–बदली की भावना
13. हीन भावना का शिकार
14. पक्षपात की भावना
15. परिश्रम हीनता
16. चोरी करना, झूठ बोलना, झगड़ा करना आदि
17. जिज्ञासा की प्रबलता
18. निरूद्देश्य भ्रमण की प्रवृति
19. काम प्रवृति की न्यूनता

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप

- बाल्यावस्था शैक्षिक दृष्टि से बालक के निर्माण की अवस्था है।

जोन्स

'बाल्यावस्था वह समय है, जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोण, मूल्य और आदर्श का बहुत सीमा तक निर्माण होता है।''

1. **भाषा के ज्ञान पर बल**: इस अवस्था में बालकों की भाषा में रूचि होती है। बालक को भाषा का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध कराना चाहिए।
2. **जिज्ञासा की सन्तुष्टि**: बालक को दी जाने वाली शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे उसकी जिज्ञासा को शान्त किया जा सके।
3. **उपयुक्त विषयों का चुनाव**: बालक के लिए ऐसे विषयों का अध्ययन आवश्यक है जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके और उसके लिए लाभदायक हो।
4. **रोचक विषय सामग्री**: बालकों की रूचियों में विभिन्नता और परिवर्तनशीलता होती है। अतः उसकी पुस्तकों की विषय सामग्री का सम्बन्ध रोचक एवं विभिन्नता लिए हुए होता है।
5. **पाठ्य–विषय व शिक्षण–विधि मे परिवर्तन**: इस अवस्था में बालकों की रूचियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। अतः पाठ्य–विषय और शिक्षण विधि में उसकी रूचियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है।
6. **सामूहित प्रवृति की तुष्टि**: इस अवस्था मे बालकों में समूह में रहने की प्रवृति होती है।
7. प्रेम एवं सहानुभूति पर आधारित शिक्षा

8. क्रिया एवं खेल द्वारा शिक्षा
9. नैतिक शिक्षा
10. रचनात्मक कार्यो की व्यवस्था
11. पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था
12. संचय प्रवृति को प्रोत्साहन
13. संवेगो के प्रदर्शन का अवसर
14. सामाजिक गुणो का विकास
15. पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था

किशोरावस्था–13 से 19 वर्ष

- किशोरावस्था अंग्रेजी के Adolscence शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका अर्थ ''परिपक्वता'' होता है। यह शब्द लैटिन भाषा का है।
- परिपक्वता शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग गैसेल द्वारा किया गया।
- 1904 में स्टेनले हॉल ने "Adolecence" नामक पुस्तक लिखी।

1. त्वरित/आकस्मिक विकास का सिद्धान्त (स्टेनले हॉल)

- इस सिद्धान्त के अनुसार बालक–बालिकाओं में जो भी परिवर्तन होते है वे सब आकस्मिक होते है।

2. क्रमिक विकास का सिद्धान्त (थार्नडाइक)

- इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था में जो भी परिवर्तन होते है वे अचानक न होकर एक क्रमिक रूप में होता है।

3. वेलेंटाइन

- ''किशोरावस्था अपराध प्रवृति के विकास का नाजुक समय है।''

4. रॉस/जॉस

- ''किशोरावस्था शैशवावस्था की पुनरावृति है।''

5. किलपैट्रीक

- ''किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।''

6. स्टेनले हॉल

- ''किशोरावस्था संघर्ष, तनाव, तूफान की अवस्था है।''

7. स्किनर

- ''किशोर को निर्णय का कोई अनुभव नही है।''

8. क्रो एंड क्रो

- ''किशोर ही वर्तमान की शक्ति व भावी शक्ति की आशा को प्रदर्शित करता है।''

9. एरिक्शन

- ''किशोरावस्था में किशोर स्वयं के व्यक्तित्व का स्पष्टीकरण चाहते है।''

किशोरावस्था के उपनाम

1. जीवन की बसन्त ऋतु
2. जीवन का स्वर्ण काल
3- Teen Age
4. समस्या समाधान की आयु
5. संक्रमण की आयु
6. जीवन का सबसे कठिन काल
7. देवदूत अवस्था

किशोरावस्था की विशेषता

1. दलभक्ति की अवस्था
2. सामाजिक स्वीकृति की अवस्था
3. सुनहरी अवस्था
4. उथल–पुथल की अवस्था
5. तार्किक चिंतन की अवस्था
6. आत्म सम्मान एवं आत्म स्वीकृति की अवस्था
7. व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ मित्रता की अवस्था
8. प्रबल दबाव, तनाव की अवस्था
9. संवेगात्मक परिवर्तन की अवस्था
10. द्रुत एवं तीव्र विकास की अवस्था
11. शारीरिक व मानसिक विकास में तीव्रता (बिग एवं हंट)
12. ईश्वर व धर्म में विश्वास
13. समाजसेवा की भावना
14. अपराधि प्रवृति का विकास
15. स्थिरता एवं समायोजन का अभाव
16. व्यवहार में भिन्नता
17. चहुमुखी विकास
18. वीर पूजा
19. विषमलिंगी सद्भावना
20. दिवास्वप्न की अधिकता
21. प्रतियोगी भावना एवं नेतृत्व करना
22. अनैतिक कार्य एवं आत्महत्या करना

किशोरावस्था में शारीरिक विकास

- किशोरावस्था में बालकों का भार बालिकाओं से अधिक होता है।
- **लम्बाई** – इस अवस्था में बालक और बालिकाओं की लम्बाई तेजी से बढ़ती है।
- **मस्तिष्क** – 1400 ग्राम
- **माँसपेशियों का वजन** – कुल वजन का 45%
- **हड्डियों की संख्या** – 206
- **हृदय की धड़कन** – (75–72)/मिनट
- **किशोरावस्था में दाँतो की संख्या** – 32

सामाजिक विकास

1. इस अवस्था मे सामाजिक कार्यों में सर्वाधिक रूचि होती है।
2. इस अवस्था में बालक ईश्वर व धर्म में विश्वास करने लगता है।
3. इस अवस्था में विषमलिंगी सद्भावना का विकास होता है।
4. इस अवस्था में प्रतियोगी भावना का विकास हो जाता है।

मानसिक विकास

वुडवर्थ

- मानसिक विकास 15 से 20 वर्ष की आयु में अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है।

बुद्धि का अधिकतम विकास

- 16 वर्ष मे पूर्ण हो जाती है।

मानसिक योग्यताएँ

- किशोरों में मानसिक योग्यताओं के स्वरूप निश्चित होता है।
- तर्क शक्ति का विकास
- कल्पना शक्ति का विकास
- रूचियों की विविधता

संवेगात्मक विकास

- संवेग कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाली प्रक्रिया है।
- विलियम मैकडुगल ने अपने मूलप्रत्यात्मक सिद्धान्त में 14 प्रकार के संवेग बताए है।

वेलेटाइन

- जब व्यक्ति मे रचनात्मक तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है तो संवेग उत्पन्न होते है।

वुडवर्थ

- संवेग व्यक्ति के आवेश में आने की स्थिति को प्रकट करने वाली प्रक्रिया है।

रॉस

- ''संवेग चेतना की अवस्था है जिसमें रागात्मक तत्वों की प्रधानता होती है।''

गेट्स

- ''बालक का संवेगात्मक व्यवहार उसके विकास के अन्य पहलुओं के अनुरूप होता है और उनसे उसका अन्तः संबंध होता है।''

जरशील्ड

- व्यक्ति में अचानक विकार आने की स्थिति को संवेग कहते है।

मैक्डुगल के अनुसार संवेग

क्र.स.	संवेग	मूल प्रवृति
1.	भय	पलायन
2.	क्रोध	युयुत्सा
3.	ईर्ष्या	निवृति
4.	वात्सल्य	पुत्र प्रेम
5.	आश्चर्य	जिज्ञासा प्रवृति
6.	विषाद	दुःख
7.	एकाकीपन	समूह की इच्छा
8.	कामुकता	विषमलिंगी सदभावना
9.	भूख	भोजनान्वेषण
10.	आमोद–प्रमोद	भोग विलास
11.	आत्महीनता	शरणगति
12.	एकाधिकार	संचयवृति
13.	आत्माभिमान	आत्म गौरव की रक्षा
14.	कृतिभाव	रचनात्मक कार्य

- संवेग व्यक्ति की क्रियाशीलता पर प्रभाव डालते है।
- संवेग सुखद व दुखद दोनो होते है।
- संवेग तत्काल उत्पन्न होते है एवं शांत धीरे–धीरे होते है।
- संवेगों के रचनात्मक एवं विनाशात्मक परिणाम होते है।
- मूल प्रवृत्तियाँ जन्म जात होती है।
- कभी नष्ट नही होती। संवेगो के साथ जुड़ी रहती है।
- शैशवावस्था में संवेगो की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है–हरलॉक
- संवेग अस्थायी होते है।
- **शैशवावस्था में संवेग ब्रिजेज के अनुसार–**

जन्म के समय	–	उत्तेजना
तीन माह मे	–	दुःख, आनन्द
छः माह मे	–	घृणा, क्रोध
12 माह मे	–	उल्लास, प्रेम
18 माह मे	–	प्रेम, अनुराग, ईर्ष्या

नैतिक विकास

- शैशवावस्था में नैतिकता का अभाव पाया जाता है।
- 4 साल का बालक अच्छे व बुरे कार्य मे अन्तर समझने लगता है।
- बाल्यावस्था में नैतिक विकास व नियमों का उल्लंघन भी करते है।
- किशोरावस्था में बालक आदर्श व्यक्ति के अनुसार बनने की कोशिश करता है।
- किशोरावस्था में अधिकार व कर्तव्यों द्वारा नैतिकता को परिभाषित करता है।
- किशोरावस्था में धार्मिक रूचियों की ओर आकर्षित होते है।

गामक विकास

क्रो एंड क्रो

- गामक विकास का अर्थ उन शारीरिक गतिविधियों से है जो नाड़ियों व माँसपेशियों के संयोजन द्वारा संभव है।
- गामक विकास सामान्य से विषिश्ट की ओर तथा निकट से दूर की ओर होता है।
- गामक विकास में वैयक्तिक भिन्नता पायी जाती है।

1. सूक्ष्म पेषीय कौशल–जैसे–लिखना, सोचना
2. स्थूल पेषीय कौशल–जैसे–दौड़ना, टहलना, गेंद पकड़ना

गामक विकास को प्रभावित करने वाले कारकः

i. वातावरण
ii. स्वास्थ्य
iii. लिंग
iv. बुद्धि
v. जन्मक्रम
vi. परिपक्वता

वंशक्रम एवं वातावरण

वंशक्रम

- अंग्रेजी के HERIDITY का हिन्दी रूपान्तरण है जिसकी उत्पत्ति HERITAGE से मानी जाती है जिसका अर्थ है–विरासत
  अतः पूर्वजो से प्राप्त विशेषताओं का पीढ़ी दर पीढ़ी सन्तानों में स्थानान्तरण होना ही वंशक्रम है।
- पूर्वजो से प्राप्त व लक्षण जिसमें सन्तान उत्पत्ति का निर्धारण होता वंशक्रम कहलाता है।

परिभाषा

वुडवर्थ

- ''बालक बालिकाओं के जन्म के समय माता–पिता मे उपस्थित विशेषताओं का सन्तानों में स्थानान्तरण होना ही वंशक्रम कहलाता है।''

जेम्स ड्रेवर

- ''माता–पिता की मानसिक एवं शारीरिक विशेषताओं का सन्तानों में स्थानान्तरण होना ही वंशक्रम कहलाता है।''

जिन्सबर्ग

- ''माता–पिता के जैविकीय विशेषताओं का सन्तानों में स्थानान्तरण होना ही वंशक्रम कहलाता है।''

सोरेन्सन

- ''माता–पिता की विशेषताओं एवं गुणों का निर्धारण बच्चों की प्रमुख विशेषता होती है।''

पीटरसन

- ''बच्चो को माता–पिता, पूर्वजों से जो लक्षण प्राप्त होते है वही वंशक्रम कहलाता है।''

बी.एन. झा

- ''बालकों की जन्मजात शक्तियों का पूर्ण योग ही वंशक्रम कहलाता है।''

वंशक्रम के सिद्धान्त

1. बीज कोष की निरन्तरता का सिद्धान्त (बीजमैन)

- बीजमैन के अनुसार जीव द्रव्य से सजीवो की उत्पत्ति होती है। वह जीव द्रव्य कभी भी समाप्त नही होती।
- यह जीव द्रव्य पीढ़ी दर पीढ़ी अण्डाणु व षुक्राणु के माध्यम से सन्तानों में स्थानान्तरित होता रहता है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है जो कभी समाप्त नही होती।

  बीजमैन ने गर्भावस्था मे दो प्रकार के कोष बताये–
  i. दैहिक कोष–शरीर का निर्माण
  ii. लैंगिक कोष–लिंग का निर्माण
- बीजमैन के जीव उत्पत्ति में एक कोष को मुख्य बताया – दैहिक कोष
- बीजमैन के अनुसार जीव उत्पत्ति की प्रथम इकाई क्रोमोसोम को बतायी।

2. वातावरण से अर्जित गुणों के वितरण का सिद्धान्त (लेमार्क, उर्विक, हेरिसन, मेक्डुगल)

- वातावरण से अर्जित गुणो का वंशक्रम के माध्यम से सन्तानों में स्थानान्तरित किया जा सकता है।
- वातावरण के अन्तर्गत स्वयं की शारीरिक संरचना में किये जाने वाले परिवर्तनों का प्रभाव उत्पन्न होने वाली सन्तानों पर पड़ता है।

<table>
<tr><th>डार्विन</th><th colspan="2">हेरिसन</th><th>मेक्डुगल</th><th>लेमार्क</th></tr>
<tr><td rowspan="2">मछली पर प्रयोग शक्तिशाली ही अपने वंशक्रम का निर्धारण करते है क्योंकि शक्तिशाली की प्रकृति स्वयं रक्षा करती है।</td><td colspan="2">तितलियों पर 10 सफेद</td><td rowspan="2">चूहे पर</td><td rowspan="2">जिराफ की गर्दन पर</td></tr>
<tr><td>स्वच्छ वातावरण

50 सफेद रंग की सन्ताने</td><td>गंदा वातावरण

50 मटेले रंग की सन्तानें</td></tr>
</table>

3. उत्पाद सूत्र की निरन्तरता का सिद्धान्त (फ्रांसिस गाल्टन)

- अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन करने हेतु गाल्टन ने श्रेणी विधि का प्रयोग किया जो सदैव घटते क्रम को प्रकट करती है।
- गाल्टन के अनुसार माता–पिता में उपस्थित उत्पाद सूत्र 50 : 50 के रूप में सन्तानों में स्थानान्तरित होता रहता है। यह प्रक्रिया कभी समाप्त नही होती।

प्रथम पीढ़ी में $100 \times 1/2 \times 1/4 \times 1/8 \times 1/16 \times 1/32 \times 1/64 \times 1/128$

$50 : 25 : 12 : 6 : 3 : 1.5 : 0.35$

4. प्रत्यागमन का सिद्धान्त/मौलिक गुणो का सिद्धान्त

- मेण्डल ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन करने हेतु 2 प्रकार के प्रयोग किये–
  1. छोटी मटर–बड़ी मटर
  2. काले चूहे–सफेद चूहे
- मेण्डल के अनुसार माता–पिता में उपस्थित गुणसूत्र पीढ़ी दर पीढ़ी 1/2 के रूप में सन्तानों में स्थानान्तरित होते रहते है। यह प्रक्रिया कभी समाप्त नही होती।

प्रत्यागम

- सन्तानों में माता–पिता से विपरीत लक्षणों का प्रकट होना ही प्रत्यागमन कहलाता है।
  जैसे–लम्बे के बौने एवं बौने की लम्बी सन्तानों का उत्पन्न होना।

मेण्डल ने दो सूत्र बतायें–

(a) जागृत सूत्र

(b) सुप्त सूत्र

(a) जागृत सूत्र

- माता–पिता से संबंध,
  माता–पिता की निषेचन कि क्रिया के दौरान अगर जागृत सूत्र सक्रिय हुए तो सन्ताने माता–पिता के समान पैदा होगी।
  जैसे–लम्बे के लम्बे, काले के काली सन्तानों का होना।

(b) सुप्त सूत्र

- पूर्वजों से सम्बन्ध
  माता–पिता की निषेचन की क्रिया के दौरान अगर सुप्त सूत्र सक्रिय हुए तो सन्ताने पूर्वजो के समान या माता–पिता के विपरीत लक्षणों की उत्पन्न होगी।
  जैसे–लम्बे के बौने, काले के गौरी सन्तानों का उत्पन्न होना
- मेण्डल के अनुसार प्रथम पीढ़ी के लक्षण द्वितीय पीढ़ी में प्रकट न होकर तृतीय पीढ़ी में प्रकट होते है। जिसका आनुवांशिक अनुपात 3:1 व प्रत्येक तीसरी पीढ़ी में यह अनुपात 9 : 3 : 3 : 1 हो जाता है।

3. वातावरण से अर्जित गुणों के अवितरण का सिद्धान्त

- बीजमैन के अनुसार वातावरण से अर्जित गुणों को वंशक्रम के माध्यम से स्थानान्तरित नहीं किया जा सकता।
- बीजमैन ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन करने हेतु चूहे की पूँछे को काटकर प्रयोग किया। उत्पन्न होने वाली सन्तान की पूँछ पूर्ण रूप से विकसित थी।

वंशक्रम का प्रभाव

1. शारीरिक संरचना का प्रभाव
2. मानसिक संरचना पर प्रभाव
3. चरित्र व महानता पर प्रभाव
4. व्यवसायिक योग्यता पर प्रभाव
5. सामाजिक स्थिति पर प्रभाव
6. मूलप्रवृतियों पर प्रभाव
7. प्रजाति की श्रेष्ठा का प्रभाव
   - शरीर का आरम्भ केवल एक कोष से होता है जिसे Zycot संयुक्त कोष कहा जाता है।
   - आनुवंशिकता की प्रथम इकाई जीन होती है।
   - संयुक्त कोष मातृ कोष व पितृ कोष से बनता है।
     मातृ कोष + पितृ कोष
     23 गुणसूत्र + 23 गुणसूत्र = 46 सामान्य बच्चा
     माता में XX गुणसूत्र होते है जबकि पिता में XY दोनों गुणसूत्र होते है।
   - 23वाँ जोड़ा लिंग निर्धारण करता है।
     XX जोड़े से लड़की उत्पन्न होती है।
     XY जोड़े से लड़का उत्पन्न होता है।
     लिंग निर्धारण में पिता का योगदान महत्वपूर्ण होता है।
     X गुणसूत्र छोटे होते है।
     Y गुणसूत्र बड़े होते है।

वातावरण

- व्यक्ति से बाहर की उन परिस्थितियों, तत्वों एवं घटनाओं का सामूहिक रूप से वातावरण है जो व्यक्ति की वृद्धि एवं उसके विकास को प्रभावित करते है।

वुडवर्थ

- ''बालक–बालिकाओं के जन्म से वृद्धावस्था तक प्रभावित करने वाला प्रत्येक कारक वातावरण कहलाता है।''

रॉस

- ''वातावरण एक बाह्य शक्ति है जो मानव जीवन पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव डालती है।''

रच

- ''मानव व्यवहार में परिवर्तन करने वाली शक्ति वातावरण कहलाती है।''

डगलस एवं हॉलैण्ड

- ''वातावरण शब्द का प्रयोग उन समस्त बाह्य शक्तियों, प्रभावो और दशाओं के योग के लिए वर्णन किया जाता है। जो व्यवहार, विकास और परिपक्वता को प्रभावित करते है।''
- जॉन लाक ने मानव विकास में वातावरण को सर्वोपरि माना है।

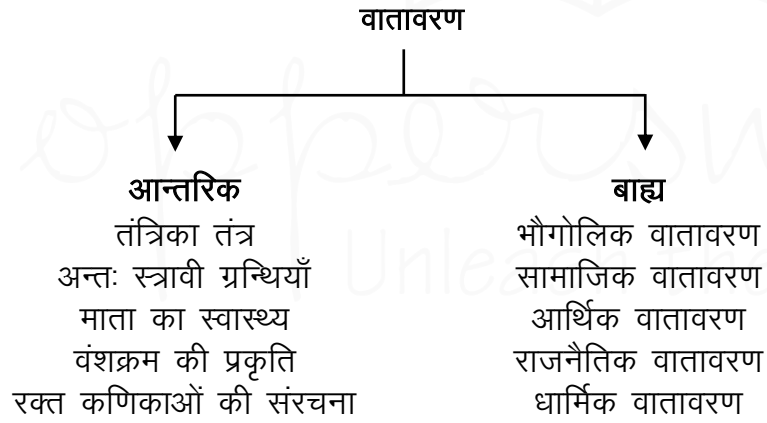

वातावरण का प्रभाव

1. शारीरिक प्रभाव
2. बुद्धि पर प्रभाव
3. व्यक्तित्व पर प्रभाव
4. मानसिक विकास पर प्रभाव
5. नैतिक विकास पर प्रभाव
6. क्रियाशीलता पर प्रभाव
7. समाज का वातावरण
8. परिवार का वातावरण
9. विद्यालय का वातावरण

वुडवर्थ

- विकास वातावरण एवं वंशक्रम का गुणनफल है।

बाल विकास के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- 1839 में टाइडमेन द्वारा समस्यात्मक बालकों के व्यवहार मे पायी जाने वाली समस्याओं के अध्ययन के लिए ''जीवन इतिहास विधि'' का निर्माण किया।
- विश्व का प्रथम सुधार गृह अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में स्थापित किया गया।
- जीन प्याजे ने बाल–विकास के क्षेत्र में संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
- बाल विकास का सर्वप्रथम अध्ययन–जॉन लॉक एवं होब्स ने किया।
- प्लेटो ने अपनी पुस्तक Republic में लिखा की बाल्यावसाी के प्रशिक्षण का प्रभाव बालक की आगे की अवस्था पर पड़ता है।
- 1657 मे कामेनिथस ने प्रथम चित्रित पाठ्य पुस्तक का निर्माण किया।
- गर्भकाल 280 दिन होता है। अधिकतम 320 दिन हो सकते है।
- बालक का जितना मानसिक विकास होता है उसका आधा प्रथम तीन वर्षो में हो जाता है।–**गुडएनफ**
- एक बालक का 16 वर्ष की आयु में मानसिक विकास पूर्ण हो जाता है।
- जन्म के समय बालक का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है जिस पर अनुभव लिखता है–**जॉन लॉक**
- **मेटा संज्ञान** – जानने के बारे में जानना
- **स्किनर व हैरीमैन** – खेल का मैदान बालक के समाजीकण निर्माण स्थल है।

बाल विकास के सिद्धान्त

1. मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त (एरिक्सन)

एरिक्सन ने अपनी पुस्तक "Childhood and Society" मे बालक का सामाजिक विकास महत्वपूर्ण माना है। एरिक्सन के सिद्धान्त में व्यक्तिगत, सांवेगिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास को समन्वित रूप से प्रस्तुत किया।

इन्होनें व्यक्तित्व विकास में व्यक्ति की सामाजिक अनुभूतियों के महत्व पर बल दिया।

व्यक्तित्व विकास में इड के स्थान पर अहम को अधिक महत्व दिया।

मनोसामाजिक सिद्धान्त निम्न पाँच तथ्यो पर आधारित है–

1. विकास की प्रत्येक अवस्था में एक मनोसामाजिक चुनौती होती है जिसे संकट कहा जाता है। जो इसका समाधान कर लेता है उसका विकास उतना ही अच्छा होता है।
2. विकास विभिन्न अवस्थाओं में होकर गुजरता है।
3. सभी की मौलिक अवश्यकताएँ एक समान होती है।
4. विकास की विभिन्न अवस्थाओं में व्यक्ति की प्रेरणा का अन्तर होता है।
5. व्यक्ति में आत्म और स्व का विकास इनके प्रति की गयी अनुक्रिया का परिणाम है।
   - ➢ इस सिद्धान्त को जीवन अवधि विकास सिद्धान्त भी कहा जाता है।
   - ➢ एरिक्सन ने अपने सिद्धान्त को आठ अवस्थाओं में बाँटा है।

क्र.सं	अवस्था	काल
1.	विश्वास बनाम अविश्वास	जन्म से 1 वर्ष
2.	स्वायत बनाम लज्जा एवं शक	1 से 3 वर्ष
3.	पहल बनाम दोष	3 से 5 वर्ष
4.	परिश्रम बनाम हीनता	6 से 12 वर्ष
5.	पहचान बनाम संभ्रांति	12 से 18 वर्ष
6.	घनिष्ठता बनाम अलगाव	20 से 35 वर्ष
7.	जननात्मक बनाम स्थिरता	36 से 55 वर्ष
8.	सम्पूर्णता बनाम निराशा	55/60 वर्ष से अधिक

1. विश्वास बनाम अविश्वास (जन्म से 2 वर्ष)

इस अवस्था में बालक को माता–पिता का प्यार व स्वयत्तता मिलती है तो विश्वास पैदा होता है और अगर उसको परिवार में स्वतंत्रता एवं प्यार मिलता है तो उसमें अविश्वास पैदा हो जाता है। दोनो ही स्थिति में बालक संकट पैदा करती है। यदि बालक इस समस्या का सफलतापूर्वक समाधान कर लेता है तो उसमें एक मनोसामाजिक स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसे आशा कहा जाता है।

2. स्वायत्त बनाम लज्जा व शक (2–3 वर्ष)

जिन बालकों पर उनके परिवार के सदस्यों को विश्वास हो जाता है तो वे उनके व्यवहार को मान्यता दे देते है। जिनसे उनमें स्वतन्त्रता एवं स्वायत्तता का गुण विकसित हो जाता है और जिन बालकों को परिवार में महत्व नही दिया जाता उनमें लज्जा का अनुभव करते है। लज्जा के कारण अपने कार्यों पर शक करने लगते है। इन दोनों का समाधान कर लेने पर उनमे इच्छा–शक्ति का गुण विकसित होता है।

3. पहल बनाम दोष (3–5 वर्ष)

प्रारम्भिक बाल्यावस्था होती है। इसे प्री स्कूल की अवस्था भी कहते है। इस अवस्था में बालक बाह्य वातावरण में नयी–नयी उत्सुकता प्रदर्शित करता है। नयी–नयी खोज करता है। माता–पिता को ऐसे गुणों की सराहना करनी चाहिए।

जो माता–पिता पहल की आलोचना करते है तो उनमे दोष उत्पन्न हो जाता है। इन दोनो का सफलतापूर्वक समाधान कर लेने से उनमे उद्देश्य नामक मनोसामाजिक गुण पैदा हो जाता है।

4. परिश्रम बनाम हीनता (5–12 वर्ष)

यह उत्तर बाल्यावस्था है। इसमे बालक नवीन ज्ञान एवं सृजन एवं बौद्धिक कौशल को प्राप्त करने का प्रयास करता है। जिससे बालकों में परिश्रम का भाव विकसित होता है और असफल होने पर हीनता का शिकार हो जाते है। इसका समाधान कर लेने पर उनमें 'उद्देश्य' का गुण विकसित हो जाता है।

5. पहचान बनाम संभ्रान्ति (12–18 वर्ष)

यह किशोरावस्था का काल होता है। इस अवस्था कर्त्तव्य परायणता नामक गुण विकसित होता है।

6. घनिष्ठता बनाम अलगाव (18–40 वर्ष)

इस अवस्था में ''प्यार'' नामक गुण विकसित होता है। इससे दूसरों के प्रति ईमानदारी एवं वफादारी करने का गुण विकसित होता है।

7. जननात्मक बनाम स्थिरता (40–65 वर्ष)

यह वयस्कावस्था है। इसमें देखभाल नामक गुण विकसित होता है।

8. सम्पूर्णता बनाम निराशा (65+ उम्र)

यह मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त की अन्तिम अवस्था है। इसमें परिपक्वता का गुण विकसित होता है।

मनोसामाजिक सिद्धान्त का शिक्षा में उपयोग

i. प्राथमिक विद्यालय के बालकों में परिश्रम का गुण विकसित किया जाना चाहिए।
ii. इस सिद्धान्त के अनुसार छोटे बच्चों को पहल का बढ़ावा देना चाहिए।
iii. बालकों में पहचान विकसित करनी चाहिए।

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास

- जीन पियाजे को विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।
- बालक के विकास पर परिस्थिति एवं वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

स्कीमा

- भौतिक वातारण के साथ की जाने वाली क्रियाओं के समय का व्यवहार प्रतिमान का समग्र रूप स्कीमा कहलाता है। यह एक मानसिक संरचना है।
- बालक बालिकाओ की मानसिक संरचना का व्यवहारगत परिवर्तन स्कीमा कहलाता है।

आत्मीकरण

- नवीन परिस्थिति में पुराने विचारों के साथ नवीन विचारो का समायोजन करना आत्मीकरण है।

व्यवस्थापन

- नई परिस्थिति में यदि पुरानी स्कीम्स सही साबित नही होती है तो बालक नवीन विचारों को ग्रहण कर हल निकालने का प्रयास करता है या अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। पुराने विचारों या अनुभव में परिवर्तन करता है।

समतोलन

- इस प्रक्रिया में बालक आत्मीकरण एवं व्यवस्थापन में सन्तुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।
- जीन पियाजे ने मानसिक संज्ञानात्मक विकास के संदर्भ में निम्न चार घटकों का वर्णन किया–

1. जैविक/शारीरिक परिपक्वता

- यह बालक के उम्र के साथ विकसित होती है।

2. भौतिक वातावरण जन्म अनुभव

- बालक अपने वातावरण के साथ अनुक्रिया करके सीखता है। पियाजे ने भौतिक वातावरण के तीन पक्ष बताये–
  - i. अभ्यास
  - ii. भौतिक अनुभव
  - iii. तार्किक गणितीय अनुभव
- भौतिक पर्यावरण एवं अभौतिक अनुभव के मध्य तार्किक संबंध पाया जाता है।

3. सामाजिक वातावरण से अनुभव

- सामाजिक अनुभव को सीखने के लिए भाषा को अहम माना। बालक समाज में अन्य लोगो के निरन्तर सम्पर्क में रहकर विभिन्न प्रकार की सामाजिक क्रियाएँ करता है।

4. संतुलन

- सन्तुलन विकास का आधारभूत कारक है। अधिगम के दौरान जब बालक समस्याओं के साथ व्यवस्थापन करता है जो उसका बौद्धिक विकास परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है। यही सन्तुलन की अवस्था है।

संज्ञात्मक विकास की अवस्थाएँ

1. संवेदी पेशीय अवस्था (0–2 वर्ष)

- इसे सेन्सोरीमोटर अवस्था भी कहा जाता है। इस अवस्था में बालक की बुद्धि उसके कार्यों के द्वारा व्यक्त होती है।
- इस अवस्था में बालक अपने भौतिक वातावरण का ज्ञान अपनी संवेदनाओं के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है।
- जन्म के पहले वर्ष के अन्त तक वह वस्तु में भेद करना सीख जाता है।
- दो साल की उम्र मे बालक को आपने चारों ओर की वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है। वह कल्पना करने लगता है।
- जन्म के एक माह तक केवल सहज क्रियाएँ ही करता है।
- पहले चार माह में बालक हाथ एवं मुँह से सम्पादित करने वाली क्रियाओ में समन्वय स्थापित करता है। इस अवस्था में बालक आवाज एवं स्पर्श मे भेद करना सीख लेता है।
- चार से आठ माह की आयु में बालक हाथ, पैर और आँखों की क्रियाओं में बेहतर समन्वय हो जाता है।
- 12 माह की आयु तक बालक बड़ो के व्यवहार का अनुकरण करना सीखता है। इस अवस्था में बालक सीखे अनुभवों का नवीन परिस्थिति में सामान्यीकरण करना प्रारम्भ कर देता है।
- 18 माह की आयु में बालक की रूचि मानसिक क्रियाओं में अधिक होती है। इस अवस्था में बालक नवीन ज्ञान को सीखने के लिए लालायित रहता है।

2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2 से 7 वर्ष)

- इसे प्री–ऑपरेशनल अवस्था भी कहा जाता है।
- इसमे वस्तु स्थायित्व उत्पन्न होता है।
- इस अवस्था में बालक अक्षर बोलना, गिनती बोलना, लिखना, शरीर के अंगों के नाम बताना सीख जाता है।
- इस अवस्था में चिन्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।
- अतार्किक चिन्तन की अवस्था भी कहते है।
- इस अवस्था में निर्जीव वस्तुओं में भी सजीव कल्पना करने लगता है।
- इस अवस्था में अनुत्क्रमणशीलता या अपलटन का गुण पाया जाता है।
- इस अवस्था में बालक के निर्णय प्रत्यक्षीकरण पर आधारित होता है।

3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7 से 12 वर्ष)

- इसे प्रत्यक्ष या स्थूल संक्रियात्मक अवस्था भी कहा जाता है।
- तार्किक चिन्तन का विकास हो जाता है।
- किसी वस्तु के प्रति अपनी धारणा विकसित कर लेता है।
- इस अवस्था में पर्यावरण के साथ अनुकूलन करने के लिए कई नियमों को सीख लेता है।
- इस अवस्था में बालकों का भाषाई विकास पूर्ण हो जाता है।
- इस अवस्था में हर शब्द का अर्थ समझने लगता है।
- उत्क्रमणशीलता व पलटन का गुण विकसित हो जाता है।

4. औपचारिक क्रियात्मक अवस्था (12 वर्ष से अधिक)

- इस अवस्था में बालक वस्तु के गुण व दोष की पहचान विश्लेषण करके करता है।
- इस अवस्था में बालक तर्क के आधार पर समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करता है।
- इस अवस्था में अमूर्त चिंतन करता है। इसे तार्किक चिन्तन की अवस्था भी कहा जाता है।
- इस अवस्था में बालक मानसिक क्रियाओं तादात्मीकरण, निषेधीकरण, पारस्परिक सम्बन्धता और सह–सम्बन्धी रूपान्तरण का प्रयोग करने लगता है।
- इस अवस्था में परिकल्पनात्मक चिन्तन पाया जाता है।
- इस अवस्था में बालक अपने जीवन की सभी समस्याओं का समाधान स्वयं करता है।

जीन पियाजे का शिक्षा में योगदान

- जीन पियाजे ने शिक्षा में बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया।
- बालक को शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार होने के बाद ही शिक्षा दी जानी चाहिए।
- बालकों को उचित वातावरण मे ही शिक्षा देनी चाहिए।
- षिक्षक को बालकों की शिक्षा सम्बन्धित सभी समस्याओं का निदान करना चाहिए।
- बालक को पर्यावरण की शिक्षा दी जानी चाहिए।

सामाजिक संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त

- प्रतिपादक– वाइगोत्स्की थे।
- इस सिद्धान्त के अनुसार बालको का सामाजिक विकास भाषाई कौशल एवं सामाजिक विभूतियों के माध्यम से होता है।
- इनके अनुसार बालक भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक सम्प्रेषण में करते है, बल्कि इसका उपयोग पथ–प्रदर्शन व प्रतिष्ठित लोगों के व्यवहार को अपनाता है।
- इस सिद्धान्त को सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है।
- बालक के संज्ञानात्मक विकास के लिए समुदाय एक केन्द्रीय भूमिका निभाता है।
- वाइगोत्स्की ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन करने के लिए ZPD तत्व का प्रतिपादन किया।

विशेषताएँ

1. भाषा, अधिगम एवं चिन्तन के विकास में परस्पर गहरा संबंध है।
2. बालक एवं शिक्षक के मध्य अन्तः क्रियाओं के फलस्वरूप सदैव उच्च मानसिक क्रियाओं का विकास होता है।
3. सामाजिक अनुभवों का इतिहास और सांस्कृतिक यंत्र दोनों विचार शक्ति के विकास के लिए बहुत आवश्यक है।
4. ज्ञानात्मक कुशलताओं की उत्पत्ति सामाजिक संबंधो में होती है जो सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निहित है।

नॉम चॉमस्की का मनो–भाषिक सिद्धान्त

- चॉमस्की के अनुसार बालक–बालिकाओं को भाषाई ज्ञान सिखाया नही जा सकता क्योंकि बालको में भाषा सीखने की जन्मजात मूल प्रवृत्ति पाई जाती है।
- बालक जिस भाषा को सीखता है वह उसे सुनकर सीखता है।
- व्याकरण की दृष्टि से सीख लेता है।
- 1957 में भाषा संबंधी जनरेटिव ग्रामर सिद्धान्त दिया।
- उन्होनें भाषा अर्जन रचना (LAD) तत्व दिया।

- बालक बोलने वाले शब्दों को वातावरण से सीखता है।
- सभी बालाके में जन्मजात भाषा अर्जन की योग्यता पायी जाती है।
- भाषा का विकास मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनो रूपों में होता है।

भाषा विकास का क्रम

1. क्रन्दन/रोना – यह बालक की प्रथम भाशा है।
2. बबलाना – इस अवस्था में बालक स्वर अ, इ, उ, अ

चॉमोस्की के अनुसार बालक का शब्द भण्डार

उम्र		शब्दकोश
18 माह	–	10 शब्द
2 वर्ष	–	272 शब्द
$2\frac{1}{2}$ वर्ष	–	400 शब्द
3 वर्ष	–	600 शब्द
$3\frac{1}{2}$वर्ष	–	900 शब्द
4 वर्ष	–	1,100 शब्द
$4\frac{1}{2}$वर्ष	–	1,900 शब्द
5 वर्ष	–	2,100 शब्द
10 वर्ष (6 कक्षा)	–	5,000 से 50,000 तक
16/18 वर्ष (12 कक्षा)	–	80,000 से ऊपर

नैतिक विकास का सिद्धान्त (कोहलबर्ग)

- कोहलबर्ग ने 10 से 16 वर्ष की आयु के बालकों का साक्षात्कार लिया।
- इससे प्राप्त सूचना के आधार पर कोहलबर्ग ने नैतिक विकास के तीन स्तर एवं छः सोपान बताये।
- बालक के नैतिक स्तर को समझने के लिए उनके तर्क एवं चिन्तन का विश्लेषण करना आवश्यक है।

नैतिक विकास के सोपान

1. पूर्व नैतिक स्तर/प्री कन्वेंशनल स्तर (4 से 10 वर्ष)

- इस अवस्था में उचित एवं अनुचित का ज्ञान दूसरो की प्रतिक्रिया के आधार पर तय होता है।
- इस अवस्था में बालकों के चिन्तन व निर्णय का आधार वातावरण की घटनाओं को माना जाता है।

(i) आज्ञा व दण्ड की अवस्था

- इस अवस्था में बालक का व्यवहार उसके प्रतिफल से निश्चित होता है।
- बालक बड़ो की आज्ञा का पालन करता है तो उसके व्यवहार की प्रशंसा होती है।
- अगर बालक नियम विरोधी कार्य करता है तो उसे दण्ड दिया जाता है।

(ii) अहंकेन्द्रिता की अवस्था

- इस अवस्था में बालक अपनी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को उचित एवं अनुचित में भेद किये बिना पूर्ण करने की कोशिश करता है।

2. परम्परागत स्तर/कन्वेशनल स्तर (10 से 13 वर्ष)

- इस स्तर में बालकों के चिन्तन व निर्णय का आधार सामाजिक घटनाओं को माना जाता है।

  a. प्रशंसा की अवस्था
  b. सामाजिक समझौते के प्रति समान की अवस्था

- समाज का सदस्य होने के नाते उसकी सभी समाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। इसलिए वह सामाजिक एवं आशंकाओं के साथ सामंजस्य बनाये रखना चाहता है।

3. उत्तर परम्परागत स्तर (13 वर्ष से ऊपर)

- इसे आत्मस्वीकृत नैतिक स्तर भी कहा जाता है।
- इस अवस्था में बालकों के चिंतन एवं निर्णय का आधार स्वयं का विवेक माना जाता है।

(i) सामाजिक सहमति की अवस्था

- समाज उसकी रक्षा करता है। इसलिए उसके प्रति सम्मान रखना उसका दायित्व है।

(ii) विवेक की अवस्था

- नैतिक विकास की अंतिम अवस्था बालक स्वयं के नैतिक बोध के आधार पर नैतिक सिद्धान्तों की व्याख्या करना प्रारम्भ कर देता है।

परिपक्वता का सिद्धान्त (अरनोल्ड गेसेल)

- परिपक्वता एक आन्तरिक जैविक प्रक्रिया का नाम है जो आनुवंशिक शक्ति द्वारा नियंत्रित होती है।
- गेसेल ने 1925 में यह सिद्धान्त दिया।
- इसमें परिपक्वता को एक क्रमबद्ध प्रक्रिया बताया।
- बालक की परिपक्वता पर वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है।
- इन्होनें अपने सिद्धान्त में जीव विज्ञान को अत्यधिक महत्व दिया।

पारिस्थितिक सिद्धान्त (ब्रोन फेन ब्रेन्नर)

- बालक के विकास पर पर्यावरण के पाँच कारको का प्रभाव पड़ता है।
- इन्होनें बाल विकास की व्याख्या सामाजिक संदर्भ में की।
- बालक के विकास मे पर्यावरण के महत्व को स्वीकार किया।

1. लघु मण्डल

- इसमें बालक के आस पड़ोस और निकटतम वातावरण के साथ की जाने वाली अन्तः क्रिया को शामिल किया जाता है।
- यह सामाजिक वातावरण का सबसे भीतरी स्तर होता है जो बालक के सांवेगिक विकास को सर्वाधिक प्रभावित करता है।
- इसमें परिवार, विद्यालय, साथी, सहयोगी, पास–पड़ोस, धार्मिक परिवेश शामिल होता है।

2. मध्य मण्डल

- यह लघु स्तरों में होने वाली अन्तः क्रियाओं के फलस्वरूप बनता है।
- इसमें पारिवारिक सदस्य, नजदीकी रिश्तेदार एवं विद्यालय के अध्यापक एवं कर्मचारी शामिल होते है।

3. बाह्य मण्डल

- इस स्तर में बालक स्वयं शामिल नही होते है।
- यह परिवार के बाहर का मण्डल है जिसमें औपचारिक संस्थानों के लोग शामिल होते है। जैसे–माता–पिता का कार्य स्थल, स्वास्थ्य केन्द्र, धार्मिक संस्थान आदि।

4. वृहत मण्डल

- यह सामाजिक वातावरण का बाहरी स्तर है। इसमें सामाजिक प्रथा, सांस्कृतिक मूल्य, आर्थिक स्तर आदि शामिल है।

5. घटक मण्डल

- यह स्तर छात्रों के विकास की सामाजिक एवं ऐतिहासिक अवस्था है। इसमें मान्यताएँ, अनुभूतियाँ आदि प्रभावित करती है।

बाल विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण
3. पालन–पोषण
4. आहार
5. बुद्धि
6. ग्रंथियो का स्त्राव
7. रोग या विकार
8. आयु
9. संस्कृति
10. आर्थिक स्थिति